International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-6 Nov-Dec- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जैन धर्म में निहित नैतिक मूल्य

डॉ देवीशंकर शर्मा

सह आचार्य जैनोलॉजी

एसबीडी राजकीय महाविद्यालय सरदारशहर

जैन धर्म मूल वैज्ञानिक आधार और नैतिक प्रथाओं वाला धर्म है। दैनिक पाठ्यक्रम में जैन मूल्यों का धार्मिक अभ्यास किया जा सकता है

प्रभावी ढंग से एक मजबूत व्यावसायिक नैतिक संरचना का निर्माण करें। बारह व्रत (अणुव्रत)-अहिंसा; सत्यता; शुद्धता; चोरी न करना; अपरिग्रह; दिशात्मक गति की सीमा; क्षेत्रीय आवाजाही की सीमा; टालने योग्य गतिविधियाँ समभाव; विशिष्टउपवास; उपभोग्य सामग्रियों और गैर उपभोग्य सामग्रियों और आतिथ्य को सीमित करना, सही मूल्यों- सही विश्वास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है; सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण. व्यावसायिक गतिविधियों को सही तरीके से करने से अनैतिक कार्य संस्कृति का निर्माण हो सकता है जिससे भ्रष्टाचार मुक्त व्यावसायिक गतिविधि हो सकती है जो अंततः एक स्वस्थ समृद्ध और बुद्धिमान राष्ट्र का निर्माण करेगी।

सूचक शब्द जैन धर्म व्यावसायिक नैतिकता बारह व्रत अहिंसा शुद्धता चोरी न करना अपरिग्रह दिशात्मकता की सीमा

परिचय

साहित्य की व्यापक समीक्षा से कई अनकहे तथ्य उजागर हुए हैं। जैन बिजनेस एथिक्स पर शाह (2007) के काम ने इस शोध को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रेरक कारक दिया। इस पेपर का फोकस एक विशेष क्षेत्र और भाग यानी जैन समुदाय के धार्मिक मूल्य पर है। पेपर इस बात पर प्रकाश डालता है कि यह समुदाय आज तक कैसे आगे बढ़ने में कामयाब रहा

उनकी व्यावसायिक विरासत को आगे बढ़ाएं। यह पेपर समुदाय के वर्तमान परिदृश्य और पश्चिमीकरण के प्रभाव और प्राचीन मूल्यों की अनदेखी की भी आलोचनात्मक जांच करता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के कारण विश्व आर्थिक व्यवस्था तेजी से बदल रही है। वैश्वीकरण और तकनीकी विस्फोट की प्रक्रिया के कारण, दुनिया भर में व्यापार अस्तित्व, परिवर्तन और प्रतिस्पर्धा की वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहा है। वर्तमान विश्व को मूल्यों के ह्रास के कारण कई तात्कालिक समस्याओं-राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही, मंदी के बाद के चरण में नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए दुनिया भर में हो रहे शोर से हमारा ध्यान नहीं हटना चाहिए, जबकि व्यवसाय के सतत विकास के दृष्टिकोण से मूल्यों की प्रासंगिकता पर शायद ही बहस की जा सकती है, "प्रश्न कुल मिलाकर अनुत्तरित ही रह गया है... मूल्य कहाँ से आयेगे?"मूल्य आचरण का मार्गदर्शन करने वाले आकांक्षी नैतिक सिद्धांत हैं। मूल्य आचरण से कहीं अधिक गहरे और आगे तक विस्तारित होते हैं, जो अनदेखी, अनकही नींव बनाते हैं जो संगठन की संपूर्ण संरचना का समर्थन करते हैं। मूल्यों के संज्ञानात्मक आयाम हैं-मानवीय मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य, शैक्षणिक मूल्य, धार्मिक मूल्य। जैन दर्शन के अनुयायी अपने जीवन में अभ्यासकर्ता की पसंद (सीमाओं) के अनुसार पांच व्रतों का अभ्यास करते हैं। अलायपर्सन इन व्रतों का धैर्यपूर्वक पालन करता है, ये व्रत हैं-अह सा इं (अहिंसा), सत्य (सच्चाई), अचौर्य (चोरी न करना ब्रह्मचैय (शुद्धता), पररग्रपररमाण (सीमित

अपरिग्रह। इन व्रतों का स्तर जैन संप्रदाय के संतों और भिक्षुणियों द्वारा मनाया जाता है। एक सामान्य घरेलू व्यक्ति द्वारा मनाए जाने वाले इन व्रतों का सीमित स्तर ही हमारे अध्ययन का केंद्र बिंदु है। यदि एक जैन व्यक्ति की जीवन शैली की इस सूक्ष्म प्रणाली को मानव जाति द्वारा वृहद स्तर पर अपनाया जाता है, तो पूरा विश्व प्रबंधकीय उत्कृष्टता के मार्ग से संतुष्ट उपभोक्ताओं की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। .कुछ लोगों को आपत्ति हो सकती है कि अपरिग्रह (गैर-अधिकार की अवधारणा) व्यवसायों के विकास को रोक सकता है क्योंकि इससे खरीदारी की प्रेरणा का स्तर नीचे आ सकता है। जबकि इसके विपरीत अपरिग्रह अर्थव्यवस्था को केवल उपयोगी उत्पादों और सेवाओं का उत्पादन करने पर मजबूर कर देगा। आधुनिक व्यावसायिक रणनीतियाँ उपभोक्तावाद की दिशा में काम कर रही हैं जो जन्म दे रही है समाज में अशांति फैलाने के लिए धर्म, अधिकांश लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मूल्य-स्रोत के रूप में कार्य करता है। किसी व्यक्ति की धारणा या धारणा कि क्या सही है या कौन सा कार्य उचित है अक्सर उसके धार्मिक सिद्धांतों या विश्वास से आकार लेता है। धार्मिक ग्रंथ और स्थापित मानदंड अधिकांश व्यक्तियों के मूल्यों को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। बहरहाल मूल्यों के अन्य स्रोत भी हैं (जैसे माता-पिता का पालन-पोषण, साथियों का प्रभाव या शिक्षा जो मानव क्रिया और व्यवहार को निर्देशित करने या प्रेरित करने में भी अपनी भूमिका निभाते हैं। इन सबके बीच

मूल्य, एक प्रश्न उठता है कि "अन्य स्रोतों की तुलना में मूल्य-स्रोत के रूप में धर्म को कितना महत्व दिया जाना चाहिए?"। यह प्रश्न अतिरिक्त महत्व रखता है क्योंकि कई मामलों में यह पाया गया है कि किसी व्यक्ति के अभ्यास या व्यवहारिक मूल्य-निर्धारण धार्मिक आदेशों के अनुरूप नहीं हैं। विशेष रूप से व्यापार के क्षेत्र में मूल्य निर्धारण प्रचार प्रथाओं कर्मचारी-कल्याण या कर-संबंधित मुद्दों और इसी तरह के मुद्दों पर असंगति स्पष्ट है। यह एक और प्रश्न को जन्म देता है क्या हम व्यावहारिकता से प्रेरित होकर मूल्य के लिए टुकड़ों में बंटा दृष्टिकोण अपना रहे हैं (जिससे व्यावसायिक मूल्यों को मानवीय या धार्मिक मूल्यों से अलग किया जा सके या मूल्य को एक समग्र ढांचा होना चाहिए। मूल्य-स्रोत के रूप में धर्म की भूमिका की पुनः खोज की आवश्यकता केवल दिए गए संदर्भ में उत्पन्न होती है जो अध्ययन की पृष्ठभूमि प्रदान करती है।

जैन धर्म में नैतिकता

मोक्ष की प्राप्ति के लिये जैन धर्म त्रिरत्न (तीन रत्नों के रूप में जाना जाने वाला मार्ग प्रदान करता है :

1. सही विश्वास (सम्यक दर्शन),

2. सही ज्ञान (सम्यक ज्ञान),

3. सही आचरण (सम्यक चरित्र)

इस प्रकार मोक्ष की प्रक्रिया इन तीनों तत्त्वों के समन्वय पर टिकी हुई है

पंच-महाव्रत

सामान्य तौर पर जैन नैतिकता में पंच-महाव्रतों का पालन करना आवश्यक होता है जो कि सही आचरण के तत्त्व हैं।

अहिंसा - इसका अर्थ है- मन वचन कर्म से किसी को भी कष्ट न पहुँचाना।

- जैन धर्म सभी के जीवन को समान मानने पर ज़ोर देता है इसलिये एक जीवित प्राणी को मारना हिंसा है।
- अपनी बातों के माध्यम से जान-बूझकर दूसरों का अपमान करना और भावनात्मक रूप से पीड़ित करके परेशान करना भी हिंसा है।
- चूँकि एक गृहस्थ हिंसा के बिना जीवन नहीं जी सकता है इसलिये उसे दूसरों को न्यूनतम चोट के साथ ही अपनी सांसारिक ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिये।
- लेकिन खाने के लिये जानवरों को मारना सख्त मना है।

सत्य - असत्य से संयम अर्थात मन वचन कर्म से असत्य का त्याग कर देना।

यदि जीवन खतरे में हो तो भी व्यक्ति को सच बताने में संकोच नहीं करना चाहिये।

लेकिन यदि सत्य का परिणाम दूसरों को नुकसान पहुँचाता है तो ऐसे मामले में झूठ बोला जा सकता है।

अस्तेय - चोरी करने से संयम।

चोरी के विभिन्न आयाम हैं जैसे - दूसरों की संपत्ति चुराना दूसरों को चोरी करने के लिये निर्देशित करना चोरी की संपत्ति प्राप्त करना।

ब्रह्मचर्य - कामुक और आकस्मिक सुखों से संयम।

- एक व्यक्ति को महिलाओं को बुरी नियत से नहीं देखना चाहिये।
- विपरीत लिंगियों के साथ सम्मान से पेश आना चाहिये।

अपरिग्रह - इसका अर्थ है किसी भी प्रकार के साधनों का संग्रह न करना।

- प्रत्येक गृहस्थ को एक सभ्य जीवन व्यतीत करने के लिये धन की आवश्यकता होती है लेकिन धन के अनुचित संचय से दुख की प्राप्ति होती है।
- इसलिये, व्यक्ति की आवश्यकताएँ सीमित होनी चाहिये और उसे संतुष्ट रहना सीखना चाहिये।

नैतिकता और गुण-

व्यक्ति को अच्छा जीवन जीने के साथ-साथ दैवीय पूर्णता की ओर भी ऊपर जाना चाहिए। प्राणियों को दुःख और हानि से बचाने के लिए धर्म का आचरण परम आवश्यक है। जैन धर्म के कुछ गुण हैं विनम्रता पवित्रता अपरिग्रह आत्म-संयम अति सहनशीलता स्पष्टवादिता सच्चाई और पूर्ण त्याग आदि।

पुरुषों और महिलाओं की समानता-

जैन धर्म का उद्देश्य सभी पुरुषों और महिलाओं को अपने छात्र जीवन में कुछ अनुशासन का अभ्यास करके अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए ज्ञान और बुद्धि प्रदान करना है। उनके दर्शन के अनुसार महिलाओं को अपने पिता भाई पति और यहां तक कि भाई-भाभी से भी आदर और सम्मान प्राप्त करना चाहिए।

शिक्षा यह जीवन में काफी अभिन्न और आंतरिक है जो केवल ज्ञान प्राप्त करने से परे है। शिक्षा का अर्थ है ज्ञान दूरदर्शिता और अच्छे चरित्र का निर्माण जिसका उद्देश्य मुक्ति प्राप्त करना है। जैन धर्म की जीवन पद्धति स्वयं को गुणवत्तापूर्ण आत्मा प्राप्त करने के लिए शिक्षित करना है जो हमें पूर्णता की ओर ले जाएगी और सभी सांसारिक दुखों से मुक्ति दिलाएगी।

निष्कर्ष

यह पेपर एक महत्वपूर्ण वैश्विक व्यापार समुदाय की नैतिकता की जांच करता है जो अपने स्वयं के मूल्यों के तहत काम करता है जो उनकी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से काफी प्रभावित हैं। यह दर्शाता है कि ऐसे समुदाय इन विश्वासों और एकजुटता के कारण सफल होते हैं और एक व्यक्तिगत और सामूहिक विवेक होता है जो उनके व्यवहार को नियंत्रित करता है। कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी स्थिरता और निष्पक्ष व्यापार पर आधुनिक साहित्य ऐसी संस्कृतियों और समुदायों से सीख सकता है जो समय और भूगोल की कसौटी पर खरे उतरे हैं। भविष्य के शोध के लिए यहां महत्वपूर्ण गुंजाइश है - क्षेत्रीय अध्ययन जो व्यक्तिगत पारिवारिक व्यवसायों और उनके अंतर-पीढ़ीगत इतिहास और प्रथाओं का विश्लेषण करते हैं बहुत ज्ञानवर्धक होंगे। साथ ही मंदिरों के आसपास गठित पारंपरिक व्यापारी संघों के ऐतिहासिक अध्ययन से आध्यात्मिकता नैतिकता और वाणिज्य के बीच गहरे संबंध पर प्रकाश पड़ेगा जो भविष्य के टिकाऊ व्यवसायों के लिए प्रासंगिक होगा। नैतिक व्यवहार की जांच करने वाली स्व-नियमन की प्रक्रियाओं को समझना दिलचस्प होगा। इसी तरह स्थायी व्यवसायों के लिए विवेक द्वारा निभाई गई भूमिका और नेतृत्व और चरित्र पर इसके प्रभाव से यह समझने में मदद मिलेगी कि ऐसा क्यों है कि कुछ समुदाय पीढ़ी दर पीढ़ी समृद्ध होते रहते हैं।

संदर्भ

1. https://www.researchgate.net/publication/367538895_The_Nonviolence_Conundrum_Political_Peace_and_Personal_Karma_in_Jain_and_Hindu_Traditions
2. https://www.researchgate.net/publication/228448708_JAIN_BUSINESS_ETHICS
3. https://www.insightsonindia.com/ethics-integrity-and-aptitude/human-values/human-values-in-jainism/
4. https://www.researchgate.net/publication/324795454_Jainism_and_Environmental_Philosophy_Karma_and_the_Web_of_Life
5. https://www.researchgate.net/publication/340663794_JAIN_PHILOSOPHY_ONE_SOLUTION_FOR_ALL_GLOBAL_PROBLEMS
6. https://www.researchgate.net/publication/348409729_Jain_Dharma_as_a_Virtue_Ethics_for_Sustainability
7. https://jainworld.jainworld.com/JWEnglish/An-Introduction-to-Jain-Philosophy.pdf